

॥ श्री स्वामी सामर्थ ॥

---

॥ अथः धनदा स्तोत्रं ॥

---

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री स्वामी सामर्थ : ॥

उदयत्सूर्यप्रकाशामे उद्यदादित्यमण्डले ।  
शिवतत्त्व प्रदे देवि धनदायै नमोऽस्तुते ॥ ३२ ॥

विष्णु रूपे विश्वमते विश्व पालन कारिणि ।  
महा सत्व गुणाक्रान्ते धनदायै नमोऽस्तुते ॥ ३३ ॥

शिव रूपे शिवानन्दे कारणानन्दविग्रहे ।  
विश्व संहार रूपे च धनदायै नमोऽस्तुते ॥ ३४ ॥

इदं स्तोत्रं मया प्रोक्तं साधकाभीष्ट दायकं ।  
यः पठेत्पाठयेद् वापिस लभेत्सकलं फलम् ॥ ३६ ॥

त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं स्तोत्रं मेतत्समाहितः ।  
स सिद्धिं लभते शीघ्रं नात्र कार्या विचारणा ॥ ३७ ॥

इदं रहस्यं परमं स्तोत्रं परम दुर्लभं ।  
गोपनीयम्प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति ॥ ३८ ॥

अप्रकाश्यमिदन्देविगोपनीयम्परात्परम् ।  
प्रपठन्न त्रासन्देहो धनवान जायतेऽचिरात् ॥ ३९ ॥

इति धनदा स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

---

॥ श्रीगुरुदत्तात्रेयार्पणमस्तु ॥

॥ श्री स्वामी समर्थार्पणं मस्तु॥

---